अभ्यास के लिए आदर्श प्रश्न पत्र (हल सहित)

सामान्य और आवश्यक निर्देश-

- इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं- खंड 'अ' और 'ब'। कुल प्रश्न 13 हैं।
- खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड 'ब' में वर्णात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए दीजिए।
- दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

	खंड 'अ' (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)	
	अपठित गद्यांश	
प्रश्न 1.	निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-	(1x10=10)
	1971 के भारत-पाक युद्ध में समुद्र में जीत हासिल करने में भारतीय नौसेना द्वारा निभाई गई निणार्यक भूमिका की याद में प्रति वर्ष 04दिसंबर को नौसेना दिवस मनाया जाता है। यह एक ऐसा अवसर है जब हम अपने शहीदों को श्रध्दांजलि अर्पित करते हैं तथा अपने सेवानिवृत्त सैनिकों और युद्ध-विधवाओं के बलिदान को याद करते हैं। इस दिन भारतीय नौसेना राष्ट्र की निरंतर सेवा के प्रति अपनी वचनबद्धता और निष्ठा को दोहराती है। भारत की समुद्री शक्ति के प्रमुख उपादान और अभिव्यक्ति के रूप में समुद्री अधिकार-क्षेत्र में राष्ट्रीय सुरक्षा की निगरानी और उसमें बढोत्तरी के लिए भारतीय नौसेना एक अहम भूमिका का निर्वाह करती है अधिकांशत: जनता की नजरों से दूर 'खामोशी के साथ काम करने वाली इस सेना' के आकार और क्षमता में स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद वृद्धि हुई है, जो सतत रूप से बढ़ते इसके कार्यक्षेत्र तथा राष्ट्रीय सुरक्षा में इसके बढ़ते महत्व के अनुरूप है। नौसेना की सक्रियात्मक गतिविधियों में तदनुसार संगत विस्तार हुआ है तथा इसमें हिंद महासागरीय क्षेत्र तथा उससे परे के क्षेत्रों का भी समावेश हो गया है। यह जानकर शुख्द अनुभूति होती है कि नौसेना हमारी विस्तृत समुद्री सीमाओं की निरंतर चौकसी कर रही है और उनमे पेश आने वाले खतरों और चुनौतियों का हमेशा तेजी से और पूरी दक्षता के साथ मुकाबला किया है। समुद्री डकैती की रोकथाम, प्राक्रतिक आपदाओं और मानवीय त्रासदी के दौरान तत्काल सहायता उपलब्ध कराने में भारतीय नौसेना की अनवरत प्रतिवद्धता वास्तव में सराहनीय है। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे समर्पित और निष्ठावान नौसेना कार्मिक राष्ट्र द्वारा उन्हें सौंपे गए दायित्वों को पूरा करने के लिए सतत प्रयास करते रहेंगे। (i) परम्परागत शब्द से क्या तात्पर्य है? (क) परम्परा से गए हुए (ख) पराए वश में पड़े हुए (ग) परम्परा से मिले-जुले (घ) परम्परा से आए हुए	

	(ii) भारत-पाक युद्ध कब हुआ था? (क) 1971 में (ख) 1947 में (ग) 1965 में (घ) 1972 में (iii) यह जानकर बहुत आनंद पाप्त होता है कि हमारी नौसेना- (क) विशाल युद्धों में भाग लेती है। (ख) विशाल हिन्द महासागर में स्थित है। (ग) विशाल समुद्री सीमा की चौकसी कर रही है। (घ) जनता की नज़रों से दूर रहकर काम करती है। (iv) अहम भूमिका से क्या तात्पर्य है? (क) अपनी भूमिका (ख) महत्वपूर्ण भूमिका (ग) अभिमान से पूर्ण भूमिका (घ) अहंकार से भरी भूमिका (v) नौसेना दिवस कब मनाया जाता है? (क) 4 दिसंबर (ख) 2 दिसंबर (ग) 5 दिसंबर (घ) 3 दिसंबर (vi) नौसेना दिवस पर भारतीय नौसेना क्या करती है? (क) राष्ट्र की निरंतर सेवा के प्रति वचनबद्धता को निभाती है। (ख) अपने कर्तव्यों का निर्वाह (ग) सेना के कर्तव्यों का निर्वाह (घ) अपने दायित्वों का निर्वाह (vii) भारतीय नौसेना को क्या कहा गया है? (क) भारतीय बान (ख) खामोशी के साथ काम करने वाली (ग) भारतीय शान (घ) भारतीय आन (viii) नौसेना का विस्तार कहाँ तक है? (क) हिन्द महासागर से परे (ख) हिन्द महासागर से पहले	

	(ग) हिन्द महासागर से अरब तक (घ) हिन्द महासागर तक (ix) नौसेना किसकी चौकसी कर रही है? (क) हमारी सेना की (ख) हमारी वायु सेना की (ग) हमारी विस्तृत समुद्री सीमाओं की (घ) हमारी संक्षिप्त समुद्री सीमाओं की (x) सामना करना के लिए अनुच्छेद में आया है? (क) चौकसी करना (ख) निर्वाह् करना (ग) मुकाबला करना (घ) भूमिका निभाना	
प्रश्न 2.	निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश से संबंधित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प-चयन द्वारा दीजिए-	(1x5=5)
	अरे! चाटते जूठे पत्ते जिस दिन देखा मैंने नर को उस दिन सोचा, क्यों न लगा दूँ आज आग इस दुनियाभर को? यह भी सोचा, क्यों न टेटुआ घोटा जाए स्वयं जगपति का? जिसने अपने ही स्वरूप को रूप दिया इस घृणित विकृति का। जगपति कहाँ ? अरे, सदियों से वह तो हुआ राख की ढेरी; वरना समता संस्थापन में लग जाती क्या इतनी देरी? छोड़ आसरा अलखशक्ति का रे नर स्वयं जगपति तू है, यदि तू जूठे पत्ते चाटे, तो तुझ पर लानत है थू है। ओ भिखमंगे अरे पराजित, ओ मजलूम, अरे चिर दोहित, तू अखंड भंडार शक्ति का, जाग और निद्रा संमोहित, प्राणों को तड़पाने वाली हुँकारों से जल-थल भर दे, अनाचार के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता भर दे। भूखा देख तुझे गर उमड़े आँसू नयनों में जग-जन के तू तो कह दे, नहीं चाहिए हमको रोने वाले जनखे, तेरी भूख असंस्कृति तेरी, यदि न उभाड़ सके क्रोधानल, तो फिर समयूँगा कि हो गई सारी दुनिया कायर निर्बल। (i) कवि क्या देखकर दुनियाभर में आग लगा देना चाहता है? (क) भूखे लोगों को खाना खाते देखकर। (ख) भूखे लोगों को देखकर।	

	(ग) भूखे लोगों को जूठे पत्तलों में खाना खोजते देखने पर। (घ) लोगों को सोता हुआ देखकर। (ii) वह तो हुआ राख की ढेरी कवि ऐसा क्यों कह रहा है? (क) क्योंकि जगपति सो गया है। (ख) क्योंकि जग में समानता नहीं आई। (ग) क्योंकि अनाचार फैला हुआ है। (घ) क्योंकि जगपति राख का ढेर हो गया है। (iii) अनाचार के अंबारों में अपना ज्वलित पलीता भर दे पंक्ति में कौन-सा अलंकार है? (क) अनुप्रास अलंकार (ख) यमक अलंकार (ग) उपमा अलंकार (घ) श्लेष अलंकार (iv) कवि किसको उनकी शक्ति का भान कराना चाहता है? (क) लोगों को (ख) संसार को (ग) स्वयं को (घ) भूखों को (v) कवि ने दुनिया को क्या कहा है? (क) कायर व साहसी (ख) कायर व निडर (ग) कायर व निर्बल (घ) साहसी व निर्बल	
	अथवा	
	थोड़े से बच्चों के लिए एक बगीचा है उनके पाँव दूब पर पड़ रहे हैं असंख्य बच्चों के लिए कीचड़, धूल और गंदगी से पटी गलियाँ हैं जिनमें वे अपना भविष्य बीन रहे हैं एक मेज है सिर्फ़ छह बच्चों के लिए और उनके सामने उतने ही अंडे और उतने ही सेब हैं एक कटोरदान है सौ बच्चों के बीच	

और हजारों बच्चे
एक हाथ में रखी आधी रोटी को
दूसरे से तोड़ रहे हैं
ईश्वर होता तो इतनी देर में उसकी देह कोढ़ से गलने लगती
सत्य होता तो वह अपनी न्यायाधीश की
कुर्सी से उतरकर जलती सलाखें आँखों में खुपस लेता,
सुंदर होता तो वह अपने चेहरे पर
तेजाब पोत अंधे कुएँ में कूद गया होता लेकिन ....
यहाँ दृश्य में
सिर्फ़ कुछ छपे हुए शब्द हैं
चापलूसी की नाँद में
लपलपाती जुबानें
और मस्तिष्क में काले गणित का
पैबंद है।

(i) दूब पर पड़ने वाले पाँव किन बच्चों के हो सकते हैं?

(क) जो शिक्षित परिवार से हैं।
(ख) जो समृद्ध परिवार से हैं।
(ग) जो गरीब परिवार से हैं।
(घ) जो अभी बहुत छोटे हैं।

(ii) वे अपना भविष्य बीन रहे हैं का तात्पर्य है-

(क) गलियों में बच्चे अपना भविष्य बनाते हैं।
(ख) असंख्य बच्चे सुख नहीं पाते।
(ग) कूड़ा बीन कर गरीब बच्चे अपना जीवन चलाते हैं।
(घ) वे कूड़े में रहते हैं।

(iii) 'एक मेज है/ सिर्फ छह बच्चों के लिए/और उनके सामने/उतने ही अंडे और उतने ही सेब हैं/एक कटोरदान है सौ बच्चों के बीच/और हज़ारों बच्चे एक हाथ में राखी आधी रोटी को/ दूसरे से तोड़ रहे हैं'। उपर्युक्त पंक्तियों में कवि किस असमानता की बात कर रहा है?

(क) आर्थिक असमानता
(ख) धार्मिक असमानता
(ग) शैक्षिक असमानता
(घ) सामाजिक असमानता

(iv) कवि किस बात से निराश हो गया है?

(क) असीम सत्ता को लोग पहचानते नहीं।
(ख) नैतिक मूल्य कहीं खो गए हैं।
(ग) न्याय पाने के लिए लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ती है।
(घ) बच्चों की पोशाकों में भी बहुत अंतर है।

	(v) कवि हमें किस वास्तविकता से परिचित करवाना चाहता है? (क) बहुत से बच्चे होटलों में काम करने को मजबूर हैं। (ख) समाज में असमानताएँ हैं और ईश्वर को चिंता नहीं है। (ग) बातें सिर्फ कागज़ी हैं, चापलूसी और जोड़-तोड़ का धंधा फल-फूल रहा है। (घ) यदि सत्य होता तो सच में न्यायाधीश अपना काम करते।	
प्रश्न 3.	निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-	(1x5=5)
	(i) टेलीफ़ोन, इंटरनेट, फ़ैक्स, समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा आदि विभिन्न माध्यम हैं- (क) संचार के (ख) संचार और जनसंचार के (ग) इनमें से किसी के नहीं (घ) जनसंचार के (ii) विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का कौन सा दौर चल रहा है? (क) दूसरा (ख) पहला (ग) तीसरा (घ) चौथा (iii) इंट्रो में कितने ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जानी चाहिए? (क) दो या तीन (ख) तीन या चार (ग) चार या पाँच (घ) एक या दो (iv) समाचार पत्रों में छपने वाले फीचर में लगभग कितने शब्द होने चाहिए? (क) 250 से 2000 शब्द (ख) 500 से 5000 शब्द (ग) 100 से 500 शब्द (घ) 550 से 5000 शब्द (v) विशेषज्ञता कैसे हासिल की जा सकती है? (क) निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता (ख) सहजता (ग) अध्ययन (घ) अभ्यास	
प्रश्न 4.	निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए-	(1x5=5)
	हम दूरदर्शन पर बोलेंगे	

		हम समर्थ शक्तिवान हम एक दुर्बल को लाएंगे एक बंद कमरे में उससे पूछेंगे तो आप क्या आपाहिज हैं? तो आप क्यों अपाहिज हैं? आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा देता है? (कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा) हां तो बताइए आपका दुख क्या है जल्दी बताइए वह दुख बताइए बता नहीं पाएगा सोचिए बताइए आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है कैसा यानी कैसा लगता है (हम खुद इशारे से बताएंगे कि क्या ऐसा?) सोचिए बताइए थोड़ी कोशिश करिए (यह अवसर खो देंगे?) आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते हम पूछ-पूछ उसको रुला देंगे इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का करते हैं? फिर हम परदे पर दिखलाएंगे फूली हुई आंख की एक बड़ी तसवीर बहुत बड़ी तसवीर और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी (आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे) एक और कोशिश दर्शक धीरज रखिए देखिए हमें दोनों एक संग रुलाने हैं आप और वह दोनों	

	(कैमरा बस करो नहीं हुआ रहने दो परदे पर वक्त की कीमत है) अब मुसकुराएंगे हम आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम (बस थोड़ी ही कसर रह गई) धन्यवाद। (i) साक्षात्कारकर्ता किसे रुलाना चाहता है? (क) कैमरा मैन को (ख) दर्शक और अपाहिज दोनों को (ग) दर्शक को (घ) अपाहिज को (ii) प्रस्तुत काव्यांश से मीडिया के किस भाव का पता चलता है? (क) मदद की भावना (ख) सामाजिक कार्य की भावना (ग) संवेदनहीनता (घ) संवेदनशीलता (iii) फिर हम परदे पर दिखलाएंगे पंक्ति में अलंकार बताइए। (क) मानवीकरण (ख) उत्प्रेक्षा (ग) अनुप्रास (घ) श्लेष (iv) फूली हुई आँख की तस्वीर से क्या तात्पर्य है? (क) मीडिया का दुख (ख) अपाहिज का रोना (ग) संवेदना (घ) अपाहिज की पीड़ा (v) प्रस्तुत काव्यांश में कौन-सा रस है? (क) करुण रस (ख) रौद्र रस (ग) वीभत्स रस (घ) भयानक रस	
प्रश्न 5.	निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प को चुनिए-	(1x5=5)

	इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावत: मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है, क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है। (i) श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा किससे युक्त है? (क) सुखद परिणामों से (ख) सरल दोषों से (ग) गंभीर दोषों से (घ) दुःखद दोषों से (ii) जाति-प्रथा का श्रम विभाजन किस पर निर्भर नहीं रहता? (क) मनुष्य की स्वेच्छा पर (ख) मनुष्य की शिक्षा पर (ग) मनुष्य की समझदारी पर (घ) मनुष्य की गलती पर (iii) श्रम विभाजन पर मनुष्य की किस भावना का कोई महत्त्व नहीं रहता? (क) व्यक्तिगत भावना (ख) भेदभावपूर्ण भावना (ग) राजनीतिक भावना (घ) सामाजिक भावना (iv) किसी भी काम में कुशलता कब प्राप्त नहीं होती है? (क) जब तक समाज से सहायता प्राप्त नहीं होती (ख) जब तक व्यक्ति का दिल और दिमाग काम नहीं करता (ग) जब तक व्यक्ति चिताओं से नहीं घिरता है (घ) जब तक परिवार का सहयोग नहीं मिलता (v) जाति-प्रथा मनुष्य को निष्क्रिय कैसे बना देती है? (क) मनुष्य को आलसी बनाकर (ख) मनुष्य की आत्मशक्ति को दबाकर (ग) मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि को दबाकर	

	(घ) मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि और आत्मशक्ति दोनों को दबाकर	
प्रश्न 6.	निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए-	(1x10=10)
	(i) नहीं, नहीं, आप सब लोग खाइए - वाक्य किसने किससे कहा? (क) यशोधर बाबू ने अपनी पत्नी से (ख) यशोधर बाबू ने बच्चों के मित्रों से (ग) यशोधर बाबू ने अपनी बेटी से (घ) यशोधर बाबू ने अपने बच्चों से (ii) सिल्वर वैडिंग में गाउन पहनते समय यशोधर बाबू को कौन-सी बात चुभी? (क) पत्नी द्वारा उपेक्षा (ख) भूषण के व्यंग्य वचन (ग) दूध लाने की बात (घ) केक काटना (iii) यशोधर बाबू को कौन-सी सवारी निहायती बेहूदा लगती है? (क) गाड़ी (ख) साइकिल (ग) स्कूटर (घ) रेलगाड़ी (iv) यशोधर पंत की सिल्वर वैडिंग का प्रबंध किसने किया? (क) लेखक ने (ख) रमेश ने (ग) जनार्दन जोशी ने (घ) भूषण ने (v) जूझ कहानी के नायक को अच्छी लगती थी? (क) वर्गों में उछल कूद (ख) मास्टर की छड़ी की मार खाना (ग) कहानी लिखना (घ) शरारती बच्चों का साथ (vi) जूझ पाठ के रचयिता का नाम है- (क) धर्मवीर भारती (ख) आनंद यादव (ग) मनोहर श्याम जोशी (घ) फणीश्वर नाथ रेणु (vii) जूझ पाठ के आधार पर लेखक की माँ के अनुसार उसके पति ने लेखक को पाठशाला जाने से क्यों रोक दिया?	

	(क) अनपढ़ता से बचने के लिए (ख) खुद काम से बचने के लिए (ग) बीमारी से बचने के लिए (घ) खर्चे से बचने के लिए (viii) सिंधु घाटी में कौन सी धातु की मात्रा पर्याप्त थी? (क) हीरा और सोना (ख) पत्थर और तांबा (ग) पीतल और मोती (घ) लोहा और पत्थर (ix) अतीत में दबे पाँव पाठ के आधार पर मुअनजो-दड़ो अपने काल में किसका केंद्र रहा होगा? (क) सभ्यता का (ख) धर्म का (ग) व्यापार का (घ) राजनीति का (x) अतीत में दबे पाँव पाठ के आधार पर अजायबघर में प्रदर्शित चीजों में औज़ार तो हैं, पर हथियार कोई नहीं है। इस बात को लेकर विद्वान सिंधु सभ्यता के संबंध में क्या अनुमान लगाते हैं? (क) वहाँ की शासन व्यवस्था कमज़ोर थी। (ख) वहाँ अनुशासन जरूर था, पर ताकत के बल पर नहीं। (ग) वहाँ की सेना युद्ध में औज़ार का इस्तेमाल करती थी। (घ) वहाँ ताकत के अभाव में अनुशासन नहीं था।	
	खंड 'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न)	
प्रश्न 7.	दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-	(1x6=6)
	(क) नक्सलवाद की समस्या (ख) मेरे सपनों का भारत (ग) आतंकवाद के बढ़ते चरण (घ) मोबाइल फोन बिना सब सूना	
प्रश्न 8.	किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-	(3x2=6)
	(क) कहानी और नाटक में चरित्र-चित्रण किस प्रकार बोद्धित किया जाता है? (ख) संपादकीय टीम का क्या काम होता है ? (ग) विशेष लेखन के लिए सूचनाओं के स्रोत्र कौन से होते हैं?	
प्रश्न 9.	निम्नलिखित तीन में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए-	(4x2=8)

	(क) भीड़ भरी बस के अनुभव पर एक फीचर लिखिए। (ख) महँगाई विषय पर एक आलेख लिखिए। (ग) वन रहेंगे : हम रहेंगे पर एक फीचर तैयार कीजिए।	
प्रश्न 10.	काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-	(3x2=6)
	(क) आत्मपरिचय में कवि के कथन शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ का विरोधाभास स्पष्ट कीजिए। (ख) कवि कुंवर नारायण ने कविता की उड़ान और खिलने को चिड़िया और फूलों से किस तरह भिन्न बताया है? (ग) जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई।। / बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।। भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?	
प्रश्न 11.	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-	(2x2=4)
	(क) फ़िराक गोरखपुरी की रुबाइयों से उभरने वाले वात्सल्य के किन्हीं दो चित्रो को अपने शब्दों में चित्रित कीजिए। (ख) किशोर और युवा वर्ग समाज के मार्गदर्शक हैं। पतंग कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (ग) भोर के नभ को राख से लीपा, गीला चौका की संज्ञा दी गई है। क्यों? उषा कविता के आधार पर बताइए।	
प्रश्न 12.	गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए-	(3x2=6)
	(क) भक्तिन लेखिका के घर नौकरी करने क्यों आ गई? (ख) त्याग तो वह होता...... उसी का फल मिलता है। अपने जीवन के किसी प्रसंग से इस सूक्ति की सार्थकता समझाइए। (ग) पहलवान लुट्टन के सुख-चैन भरे दिनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।	
प्रश्न 13.	गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए-	(2x2=4)
	(क) लेखक के अनुसार, बाजार का जादू व्यक्ति के मन-मस्तिष्क पर किस प्रकार प्रभाव डालता है? बाज़ार के जादू के प्रभाव से बचने का क्या उपाय है? (ख) भूमंडलीकरण के इस दौर में भगत जी जैसे लोग क्या प्रेरणा देते हैं? बाज़ार दर्शन के आधार पर उत्तर दीजिए। (ग) शिरीष के फूलों की मुख्य विशेषता का वर्णन कीजिए।	

अंक योजना

सामान्य निर्देश-
- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
- खंड – अ में वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक है।
- यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएं।
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक-योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

		खंड – अ वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तर	
प्रश्न क्रम संख्यां		उत्तर	अंक विभाजन
प्रश्न 1.	(i)	(ग) परम्परा से मिले-जुले	1
	(ii)	(क) 1971 में	1
	(iii)	(ग) विशाल समुद्री सीमा की चौकसी कर रही है।	1
	(iv)	(ख) महत्वपूर्ण भूमिका	1
	(v)	(क) 4 दिसंबर	1
	(vi)	(क) राष्ट्र की निरंतर सेवा के प्रति वचनबद्धता को निभाती है।	1
	(vii)	(ख) खामोशी के साथ काम करने वाली	1
	(viii)	(क) हिन्द महासागर से परे	1
	(ix)	(ग) हमारी विस्तृत समुद्री सीमाओं की	1
	(x)	(ग) मुकाबला करना	1
प्रश्न 2.	(i)	(ग) भूखे लोगों को जूठे पत्तलों में खाना खोजते देखने पर।	1
	(ii)	(ख) क्योंकि जग में समानता नहीं आई।	1
	(iii)	(क) अनुप्रास अलंकार	1
	(iv)	(घ) भूखों को	1
	(v)	(ग) कायर व निर्बल	1
		अथवा	
	(i)	(ख) जो समृद्ध परिवार से हैं।	1
	(ii)	(ग) कूड़ा बीन कर गरीब बच्चे अपना जीवन चलाते हैं।	1
	(iii)	(क) आर्थिक असमानता	1
	(iv)	(ख) नैतिक मूल्य कहीं खो गए हैं।	1
	(v)	(ग) बातें सिर्फ कागज़ी हैं, चापलूसी और जोड़-तोड़ का धंधा फल-फूल रहा है।	1

प्रश्न 3.	(i)	(ख) संचार और जनसंचार के	1
	(ii)	(ग) तीसरा	1
	(iii)	(ख) तीन या चार	1
	(iv)	(क) 250 से 2000 शब्द	1
	(v)	(क) निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता	1
प्रश्न 4.	(i)	(ख) दर्शक और अपाहिज दोनों को	1
	(ii)	(ग) संवेदनहीनता	1
	(iii)	(ग) अनुप्रास	1
	(iv)	(घ) अपाहिज की पीड़ा	1
	(v)	(क) करुण रस	1
प्रश्न 5.	(i)	(ग) गंभीर दोषों से	1
	(ii)	(क) मनुष्य की स्वेच्छा पर	1
	(iii)	(क) व्यक्तिगत भावना	1
	(iv)	(ख) जब तक व्यक्ति का दिल और दिमाग काम नहीं करता	1
	(v)	(घ) मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि और आत्मशक्ति दोनों को दबाकर	1
प्रश्न 6.	(i)	(ख) यशोधर बाबू ने बच्चों के मित्रों से	1
	(ii)	(ग) दूध लाने की बात	1
	(iii)	(ग) स्कूटर	1
	(iv)	(घ) भूषण ने	1
	(v)	(ख) मास्टर की छड़ी की मार खाना	1
	(vi)	(ख) आनंद यादव	1
	(vii)	(ख) खुद काम से बचने के लिए	1
	(viii)	(ख) पत्थर और तांबा	1
	(ix)	(क) सभ्यता का	1
	(x)	(ख) वहाँ अनुशासन जरूर था, पर ताकत के बल पर नहीं।	1
		खंड – ब (वर्णनात्मक प्रश्न)	
प्रश्न 7.		किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए- आरंभ - 1 अंक विषयवस्तु - 3 अंक	6x1=6

		प्रस्तुति -1 अंक भाषा – 1 अंक **(1.) नक्सलवाद की समस्या** बढ़ते दौर के साथ नक्सलवाद की घटनाओं में वृद्धि होती रही है।हाल ही में नक्सलवाद की घटनाएँ बढ़ी हैं। प० बंगाल में राजधानी एक्सप्रेस को घंटों रोका जाता है तो कहीं थाने, रेलवे स्टेशन आदि को बम से उड़ा दिया जाता है। इन सब घटनाओं से सारा देश उद्वेलित हो उठा है। वस्तुत: नक्सलवाद माक्सवाद के वर्ग संघर्ष सिद्धांत पर आधारित है। इसके अंतर्गत दलित व शोषित वर्ग का प्रथम शत्रु जमींदार, ठेकेदार, साहूकार आदि हैं। नक्सलवादी मानता है कि ये छोटे पूँजीपति ही पूँजीवाद के स्तंभ अधिकारियों, बड़े पूँजीपतियों तथा शासक वर्ग को आधार प्रदान करते हैं। नक्सलवादियों का प्रमुख उद्देश्य सत्ता केंद्रों पर हमला करना होता है।वास्तव में ये लोग सत्ता के विरुद्ध संघर्ष करते हैं। ये लोग विभिन्न तरीकों से धन वसूलते हैं। ये वन-रक्षकों से वसूली, सरकारी या पूँजीपतियों से धन छीनना, फिरौती, विदेशों से धन, हथियार आदि प्राप्त करते हैं। इनका लक्ष्य नक्सल राज्य की स्थापना करना है। ये ‘दंडकारण्य’ की माँग कर रहे हैं। सरकार द्वारा नक्सलवादी आंदोलन को दबाने के प्रयास भी किए गए हैं। कई बार सुरक्षा-बलों ने अभियान चलाए, परंतु राजनीतिक अदूरदर्शिता के कारण ये अभियान असफल हो गए हैं। आज इनकी शक्ति इतनी बढ़ गई है कि ये भारत की संप्रभुता को चुनौती देने लगे हैं। इस समस्या के समाधान के लिए केंद्र व राज्य सरकारों को गंभीर प्रयास करने होंगे। सरकार को चाहिए कि वह नक्सली नेताओं से बातचीत करके उनकी समस्याएँ जाने तथा नक्सल-प्रभावित क्षेत्रों का पिछड़ापन दूर करने का प्रयास करें। साथ-साथ भूमि-सुधार कानून में संशोधन भी जरूरत है। यदि ये प्रयास तत्काल नहीं किए गए तो देश की एकता खतरे में पड़ जाएगी।बिना उनकी समस्याओं को सुने और समझे ,इस नक्सलवाद को नहीं रोका जा सकता है। **(2.) मेरे सपनों का भारत** भारत देश मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है। मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व का अनुभव होता है। मेरा देश संसार के सभी देशों से निराला है और संसार के सब देशों से प्यारा है। मैं भारत को विश्व के शक्तिशाली देश के रूप में देखना चाहता हूँ। मैं ऐसे भारत का सपना देखता हूँ, जो भ्रष्टाचार, शोषण और हिंसा से मुक्त हो। मेरे सपनों का भारत ‘सुशिक्षित भारत' है। उसमें अनपढ़ता, निरक्षरता और बेरोज़गारी का कोई स्थान नहीं है। मैं चाहता हूँ कि हमारे देश के नियोजक ऐसी शिक्षा व्यवस्था लागू करें, जिसके बाद व्यवसाय या नौकरियाँ सुरक्षित हों। कोई भी व्यक्ति अशिक्षित न हो और कोई भी शिक्षित बेरोज़गार न हो। मैं चाहता हूँ कि भारत सांप्रदायिक दंगों-झगड़ों से दूर रहे। सब में आपसी भाईचारा और प्रेम का संबंध हो। राष्ट्रीय एकता का संचार हो। जो सम्मान भारत का प्राचीन काल में था वही सम्मान, मैं पुनः उसे प्राप्त कराना चाहता हूँ।	

मैं फिर से रामराज्य की कल्पना करता हूँ, जिसमें सभी लोगों को जीने के समान अवसर प्राप्त हो सकें। भारत एक बार फिर 'सोने की चिड़िया' बन जाए। मेरे सपनों का भारत वह होगा, जो राजनीतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और वैज्ञानिक आदि विभिन्न दृष्टियों से उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा। भावी भारत के सपनों की पूर्णता के लिए आवश्यक है कि हमारे देश का प्रत्येक नागरिक देश की प्रत्येक कुरीति को समूल नष्ट करने का दृढ़ संकल्प करें क्योंकि देश में बदलाव लाना देश के नागरिकों पर हीं निर्भर करता है। मैं अपने सपनों के भारत को पूरी तरह से समृद्ध देखना चाहता हूँ।

(3.) आतंकवाद के बढ़ते चरण

'मानवतावाद' और 'आतंकवाद' सर्वथा दो विरोधी अवधारणाएँ हैं। मानवतावाद के मूल में 'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'विश्व-बंधुत्व' की भावना है। यह 'संपूर्ण विश्व एक परिवार है' का संदेश देता है। इसके मूल में सह-अस्तित्व की भावना है जबकि आतंकवाद अलगाववाद पर आधारित है। आतंकवाद में मानवीय संवेदनाओं का स्थान नहीं होता। पिछले कुछ दशकों से जिस समस्या ने विश्व को सबसे अधिक आक्रांत किया है, वह है-विश्वव्यापी आतंकवाद। आतंकवाद वह प्रवृत्ति है, जिसमें कुछ लोग अपनी आकांक्षा की पूर्ति के लिए हिंसात्मक और अमानवीय साधनों का प्रयोग करते हैं।इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी कार्य जो हिंसक और मानवता के विपक्ष में हो,वे सब आतंकवाद के श्रेणी में आते हैं।

सामान्यतः संसार के सभी देश इसके विरुद्ध संगठित हो रहे हैं। आतंकवाद मानव-जाति के लिए कलंक है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि इसका समूल नाश किया जाए। कोई भी देश इस प्रकार के आतंकवादी संगठनों को प्रश्रय न दे और न किसी प्रकार उनकी सहायता करे। आतंकवाद जैसी समस्या का समाधान बौद्धिक और सैनिक दोनों स्तरों पर किया जाना चाहिए। विश्व की सभी सरकारों को अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद के विरुद्ध परस्पर सहयोग करना चाहिए ताकि कोई भी आतंकवादी गुट कहीं शरण या प्रशिक्षण न पा सके। आतंकवाद के समाप्त होने पर ही मानवता का स्वप्न पूरा हो सकेगा।कई बार आतंकवाद की शुरुआत हमारी गलती से ही होती है।इसके पूर्ण समाधान के लिए हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को और सशक्त बनाने की जरूरत है।

(4.) मोबाइल फोन बिना सब सूना

संचार के क्षेत्र में क्रांति लाने में विज्ञान-प्रदत्त कई उपकरणों का हाथ है, पर मोबाइल फोन की भूमिका सर्वाधिक है। मोबाइल फोन जिस तेजी से लोगों की पसंद बनकर उभरा है, उतनी तेजी से कोई अन्य संचार साधन नहीं। आज इसे अमीर-गरीब, युवा-प्रौढ़ हर एक की जेब में देखा जा सकता है। इसके प्रभाव से शायद ही कोई बचा हो। कभी विलासिता का साधन समझा जाने वाला मोबाइल फोन आज हर व्यक्ति की जरूरत बन गया है।

मोबाइल की ही देन है कि एक कॉल पर राज मिस्त्री, प्लंबर, कारपेंटर आदि उपस्थित हो जाते हैं। विद्यार्थी पुस्तकों का पीडिएफ या उपयोगी लेक्चर डाउनलोड करके समयानुसार पढ़ते-सुनते रहते हैं। इसमें लगे कैल्कुलेटर, कैलेंडर भी बड़े उपयोगी हैं, जिनका उपयोग समय-समय

		पर किया जा सकता है। साथ-साथ विशेष रूप से महिलाएँ एवं बुजुर्ग मोबाइल के साथ अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं; क्योंकि कोई भी परेशानी आने पर वे तत्काल अपने परिजनों से संपर्क कर सकते हैं। जहाँ एक ओर इसका उपयोग जरूरी है, तो दूसरी तरफ इसके उपयोग से कई नुकसान भी हैं।और ऐसा कहना अनुचित नहीं है कि हम आज के दौर में मोबाइल फोन के गुलाम बन कर रह गए हैं। विद्यार्थीगण पढ़ने की बजाय फोन पर गाने सुनने, अश्लील फ़िल्में देखने, अनावश्यक बातें करने में व्यस्त रहते हैं। इससे उनकी पढ़ाई का स्तर गिर रहा है। मोबाइल फोन पर बातें करना हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इस पर ज्यादा बातें करना बहरेपन को न्यौता देना है। आतंकवादियों के हाथों इसका उपयोग गलत उद्देश्य के लिए किया जाता है। मोबाइल फोन नि:संदेह अत्यंत उपयोगी उपकरण और विज्ञान का चमत्कार है। इसका सदुपयोग और दुरुपयोग मनुष्य के हाथ में है।	
प्रश्न 8.	(क)	कहानी में चरित्र-चित्रण अलग प्रकार से किया जाता है और नाटक में उसकी विधि कुछ बदल जाती है। रूपांतरण करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता और नाटक के पात्रों में उसका प्रयोग किया जाना चाहिए। पात्र की भावभंगिमाओं और उसके तौर तरीकों से प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। कहानी के लंबे संवादों को छोटा करके उन्हें अधिक नाटकीय बनाया जा सकता है। स्थानीय रंग में संवादों को रंग कर चरित्र-चित्रण को परिमार्जित किया जा सकता है। ध्वनि और प्रकाश भी चरित्र-चित्रण करने तथा संवेदनात्मक प्रभाव उत्पन्न करने में कारगर सिद्ध हो सकते हैं। प्रायः निर्देशक ही इस संबंध में निर्णय लेते हैं पर लेखकों के सुझाव सदा स्वागत योग्य होते हैं। लेखक को यदि इन संभावनाओं की जानकारी है तो उसवेफ अंदर आत्मविश्वास पैदा होता है और रूपांतरण का कार्य संतोषजनक होता है।	3x2=6
	(ख)	किसी अखबार में प्रकाशित होने वाली सामग्री से अशुद्धियाँ और गलतियों को छाँटना ही संपादकीय टीम का मुख्य कार्य है । चूँकि मुद्रित माध्यमों में गलती होने की संभावना औरों से अधिक होती हैं, इसीलिए पत्रिका / अखबार में संपादकीय टीम होती है । उनका काम होता है सामग्रियों को प्रकाशित होने योग्य बनाना, ताकि पाठक की ओर से कोई शिकायत न हो ।	
	(ग)	विशेष लेखन के लिए निम्नलिखित स्रोत्र होते हैं- प्रेस कान्फ्रेंस, विज्ञप्ति, साक्षात्कार, सर्वे, सरकारी -गैरसरकारी संस्थाएं, संबंधित विभाग, इंटरनेट तथा अन्य संचार माध्यम एवं स्थायी अध्ययन सामग्री अति आवश्यक होते हैं।	
प्रश्न 9.	(क)	**भीड़ भरी बस के अनुभव** देश की राजधानी दिल्ली में जनसंख्या में इस कदर वृद्धि हो रही है कि आने वाले वर्षों में लोगों के ऊपर लोग चलकर जाएँगे। हाँ यह सत्य है और इसका प्रत्यक्ष उदाहरण आए दिन दिल्ली की बसो में देखने को मिलता है। बस किसी स्टैंड पर आती है और सवारी पीछे के दरवाज़े से चढ़ती है और इसके बाद सवारी का कोई काम नहीं। वह धक्के खा-खाकर पीछे के दरवाज़े से कब आगे ड्राइवर के पास तक जा पहुँचती है, यह स्वयं सवारी को भी नहीं पता चलता। जब कोई सवारी भीड़ से बचने के कारण अगले दरवाज़े से बस में चढ़ती है, तो उसे कंडक्टर तक पहुँचने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। भीड़ भरी बस में महिला वर्ग के साथ बदतमीजी व अन्य प्रकार की समस्याएँ उजागर होती हैं।अतः भीड़ भरी बस का अनुभव	4x2=8

		अत्यंत बुरा रहा, परंतु भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं के बावजूद भी प्रत्येक दिन इन्हीं बसों में सफर करने को मजबूर हैं।	
	(ख)	**महँगाई** महँगाई का अर्थ है-दैनिक उपभोग की वस्तुओं की कीमत का आवश्यकता से अधिक बढ़ना यानी उनमें मूल्यवृद्धि। प्रत्येक देश की सरकार का यह दायित्व है कि वह अपनी जनता की मूलभूत आवश्यकताओं को कम कीमत पर बेहतर गुणवत्ता के साथ पूरा करे। दैनिक उपभोग की वस्तुओं की कीमत इतनी कम हो कि निम्न आय वाला व्यक्ति भी इन्हें सरलता से खरीद सके, परंतु समय-समय पर गलत आर्थिक नीतियों के दुष्परिणामस्वरूप आम जनता को महँगाई का सामना करना पड़ता है। महँगाई बढ़ने के कई कारण हैं। उन कारणों मे कुछ प्राकृतिक हैं , तो कुछ सामाजिक तथा कुछ राजनीतिक। सूखा, बाढ़, भूकंप, फसलों का खराब हो जाना आदि जहाँ प्राकृतिक कारण हैं, वहीं जमाखोरी, दोषपूर्ण वितरण प्रणाली के साथ-साथ प्रशासन, राजनीतिक दलों की खराब आर्थिक नीतियाँ आदि महँगाई बढ़ाने के प्रमुख गैर-प्राकृतिक कारण हैं। कभी-कभी अचानक थोपे गए युद्ध से भी महँगाई बढ़ जाती है। बाज़ार में वस्तुओं की कमी का फायदा जमाखोर उठाते हैं और आवश्यकता की वस्तुओं को मनमाने दामों पर बेचते हैं। सरकार द्वारा की जाने वाली अनाज की वितरण प्रक्रिया इतनी दोषपूर्ण है कि एक टन अनाज आम जनता तक पहुँचते-पहुँचते आधा या इससे भी कम रह जाता है। टनों अनाज गोदामों या खुले आसमान के नीचे पड़े-पड़े सड़ जाते हैं, और देश के नागरिक भूखे मर रहे होते हैं। यदि हमें बढ़ती महँगाई नियंत्रित करनी है, तो इससे संबंधित व्यापक राष्ट्रीय नीति बनाने की आवश्यकता होगी। वितरण प्रणाली को दोषमुक्त बनाना होगा। आवश्यक वस्तुओं की कीमतों पर सरकारी स्तर पर निगरानी रखी जानी अत्यंत आवश्यक है। महँगाई को नियंत्रण में रखना अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा इसके अनेक दुष्परिणाम हो सकते हैं।	
	(ग)	**वन रहेंगे : हम रहेंगे** वन संपदा भी प्रकृति की एक अद्भुत और अत्यंत उपयोगी देन है। वन तथा पेड़-पौधे पर्यावरण से कार्बन-डाइऑक्साइड सोख कर, उसे प्राणदायिनी ऑक्सीजन में बदलते हैं। वन बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं का कुप्रभाव कम करते हैं। मृदा अपरदन को रोकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते है कि वन पर्यावरण को संतुलित कर सभी जीवों के अस्तित्व की रक्षा करते हैं। वनों से होने वाले लाभों के कारण मनुष्य ने उनकी अंधाधुंध कटाई की है, जिसके कारण अनेक गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। यदि वृक्ष ही न रहे, तो संपूर्ण मानव जगत का अस्तित्व ही मिट जाएगा। यह भी सही है कि विकास के लिए वृक्ष काटना आवश्यक है। इसके लिए हमें वृक्षारोपण को अपना कर्तव्य समझ, इसका पालन करना चाहिए। इसके साथ ही हमें सतत पोषाणीय विकास की विचारधारा को अपनाना चाहिए।	
प्रश्न 10.	(क)	कवि का यह कथन कि वह शीतल वाणी में आग लिए घूम रहा है, विरोधाभास की स्थिति को उत्पन्न करता है। इसके पीछे यह रहस्य छिपा है कि जब कवि अपने संघर्षों को कविता का रूप	3x2=6

		देता है, तो वह शीतल वाणी बन जाती है, जबकि उसका मन दु:खों की अग्नि में जल रहा होता है। अपने दु:खों एवं विरोधों को कोमल शब्दों के माध्यम से कवि अपनी रचनाओं में व्यक्त करता है इसलिए उसकी शीतल वाणी भी असंतोष एवं व्याकुलता की आग से भरी हुई है।	
	(ख)	कवि का मानना है कि कविता की उड़ान सीमाहीन एवं अनंत होती है, क्योंकि कविता में कवि के मन के भाव असीम कल्पनाओं के पंख लगाकर उड़ते हैं, जबकि चिड़िया के पंखों के उड़ान की एक निश्चित एवं सीमित सामर्थ्य होती है। इसके अतिरिक्त, चिड़िया उड़कर सभी स्थानों तक नहीं पहुँच सकती, जबकि कविता की उड़ान में ऐसा संभव है। इस प्रकार सीमा एवं सामर्थ्य संबंधी अंतर चिड़िया और कविता की उड़ान का मुख्य अंतर है। कवि कहता है कि कविता एवं फूल दोनों खिलते हैं, लेकिन फूल तो एक बार खिलकर मुरझा जाते हैं, जबकि दूसरी तरफ कविता एक बार खिलने अर्थात् शब्दों के रूप में अभिव्यक्ति प्राप्त कर लेने के बाद निरंतर नया अर्थग्रहण करके विकसित होती रहती है। वह कभी नष्ट नहीं होती, अपितु समय बीतने के साथ-साथ वह अधिक व्यापक अर्थग्रहण करके अमिट हो जाती है।	
	(ग)	भाई के शोक में डूबे राम ने कहा कि स्त्री के लिए प्यारे भाई को खोकर, मैं कौन सा मुँह लेकर अवध वापस जाऊँगा? मैं जगत में बदनामी भले ही सह सकता हूं क्योंकि स्त्री की हानि से (इस हानि को देखते) कोई विशेष क्षति नहीं थी। स्त्री का विकल्प हो सकता है पर भाई का नहीं। उस समय का समाज पुरुषप्रधान था। नारी को समाज में समानता का अधिकार नहीं था।	
प्रश्न 11.	(क)	दीवाली की शाम को घर स्वच्छ तथा पवित्र बनाया गया है। घर को खूब सजा दिया गया है। माँ बच्चे के लिए चीनी मिट्टी के चमकदार खिलौने लाई है। उस रूपवती के चेहरे पर एक आभा है। वह अपने बच्चे के घरौंदे को सजाती है तथा उसमे एक दीप जलाती है। बच्चा प्रसन्न हो जाता है। अपने बच्चे की प्रसन्नता से ही माँ का चेहरा गर्व से फूला हुआ है।	2x2=4
	(ख)	कवि ने 'पतंग' कविता में बच्चों के उल्लास व निर्भीकता को प्रकट किया है। यह बात सही है कि किशोर और युवा वर्ग उत्साह से परिपूर्ण होते हैं। वे सच्ची धुन एवं लगन से किसी कार्य को करते हैं। उनके मन में जो कल्पनाएँ होती हैं। वे उन कल्पनाओं को साकार करने के लिए मेहनत करते हैं और उसे मूर्त रूप प्रदान करते हैं। आकाश में पतंग उड़ाते हुये बच्चों की निगाहें सिर्फ ऊँचाई को छूने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं वैसे ही समाज को विकास की नवीन दिशा में अग्रसर करने के लिए इसी एकाग्रता एवं जोश की जरूरत है। अतः वास्तव में किशोर व युवा वर्ग समाज के मार्गदर्शक हैं।	
	(ग)	कवि कहता है कि भोर के समय ओस के कारण आकाश नमी युक्त व धुँधला होता है। राख से लिपा हुआ चौका भी मटमैला रंग का होता है। दोनों का रंग लगभग एक जैसा होने के कारण कवि ने भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका की संज्ञा दी है। दूसरे, चौके को लीपे जाने से वह स्वच्छ हो जाता है। इसी तरह भोर का नभ भी पवित्र होता है।	
प्रश्न 12.	(क)	पति की मृत्यु के बाद भक्तिन के बड़े दामाद की भी अकाल मृत्यु हो गई थी। जेठ के लड़के ने छल-बल का प्रयोग करते हुए लक्ष्मी की बड़ी बेटी का विवाह अपने तीतरबाज़ साले के साथ करा दिया। इस विवाह के बाद प्रतिदिन उनके घर में झगड़े होने लगे और धन का भी अत्यधिक अभाव रहने लगा। एक बार वह लगान समय पर न चुका सकी, जिसके कारण उसे दिनभर	3x2=6

		धूप में खड़े रहने की कड़ी सजा भी मिली। इस अपमान को वह सह न सकी और नौकरी करने के लिए शहर में लेखिका के घर आ गई।	
	(ख)	मैं मध्यवर्गीय परिवार से हूँ। किंतु हमारा परिवार बड़ा है कमाने वाले सदस्य दो ही हैं। इसलिए कमाई का साधन ज्यादा नहीं है। पिछले दिनों एक भिखारी मेरे घर आया। कपड़ों के नाम पर उसके बदन पर फटा हुआ कुर्ता और टूटी हुई चप्पल थी। सर्दी के दिन थे, ऐसी हालत में और अधिक दयनीय लग रहा था। मेरे पास भी दो ही स्वेटर थे। मैंने उसकी स्थिति को देखते हुए अपना एक स्वेटर उसे दे दिया और वह आशीर्वाद देता चला गया। शायद मेरे लिए यही त्याग था। त्याग तो वह होता है जो दूसरों को अपनी जरूरतों को दूर रखकर किया जाए अर्थात् अभाव में किया गया दान ही त्याग कहलाता है और उसी त्याग का फल मिलता है।	
	(ग)	पहलवान लुट्टन के सुख-चैन के दिन तब शुरू हुए जब उसने चाँद सिंह को कुश्ती में हराकर अपना नाम रोशन किया। राजा ने उसे दरबार में रखकर उसका सम्मान किया। इससे उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। पौष्टिक भोजन व राजा की स्नेह-दृष्टि मिलने से उसने सभी नामी पहलवानों को जमीन सुँघा दी। अब वह दर्शनीय जीव बन गया। मेलों में वह लंबा चोगा व अस्त-व्यस्त पगड़ी पहनकर मस्त हाथी की तरह चलता था।	
प्रश्न 13.	(क)	जिस प्रकार चुंबक का जादू लोहे पर चलता है उसी प्रकार बाजार का गहरा जादू व्यक्ति के मन-मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है। जब व्यक्ति की जेब भरी होती है और मन खाली हो, तो जादू का असर खूब चलता है। जेब खाली और मन भरा नहीं होने पर भी उसका जादू चल जाता है। इस प्रभाव से बचने के लिए हमें बाज़ार में तब जाना चाहिए, जब हमारा मन खाली न हो। जिस प्रकार यदि गर्मी में पानी पीकर बाहर जाएँ, तो लू लगने की संभावना कम रहती है, उसी प्रकार यदि आपका मन लक्ष्य से भरा हो तो आप बाज़ार से अपना सुख ढूँढ ही लेंगे और बाज़ार आपको तंग नहीं कर पाएगा।	2x2=4
	(ख)	भूमंडलीकरण के इस दौर में भगत जी जैसे लोग प्रेरणादायी हैं ये मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। भगत जी का अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण है इसलिए बाजार का जादू उनके मन पर अपना प्रभाव नहीं डाल पाता। बाज़ार में उनकी आँखें खुली रहती थीं, पर मन भरा होने के कारण उनका मन अनावश्यक चीज़ें खरीदने के लिए मचलता। ऐसे व्यक्ति ही बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं। भगत जी के आचरण से प्रभावित होकर लोग अनावश्यक स्पर्द्धा में नहीं पड़ेंगे। वे व्यर्थ की वस्तुएँ खरीदने बाज़ार नहीं जाएँगे। ऐसा करने से आपसी झगड़ों में कमी आएगी और समाज में शांति का वातावरण स्थापित होगा।	
	(ग)	शिरीष के फूलों की मुख्य विशेषता है कि वे फूल ज्येष्ठ मास की भयंकर गर्मी में भी फूलने की हिम्मत करते हैं। आँधी, तूफ़ान तथा लू भी इसकी हिम्मत का लोहा मानते हैं। इसके अलावा कनेर और अमलतास इस मौसम में दिखाई तो देते हैं, पर शिरीष के फूल की तुलना उनसे नहीं की जा सकती, क्योंकि अमलतास केवल 15-20 दिनों के लिए ही फूलता है।	